<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

चंपारण में दो मजदूर किसानों का आत्मदाह गांधी विमर्श पर सवाल खड़े कर रहा है–स्वामी अग्निवेश

जहां पर एक तरफ बिहार की सरकार तथा केंद्र की सरकार चंपारण सत्याग्रह शताब्दी समारोह में मशगूल है वहीं दूसरी तरफ गांधी की कर्मभूमि चंपारण में दो चीनी मिल मजदूरों का अपने बकाए पैसे को लेकर 3 दिन से धरना सत्याग्रह और किसी भी प्रकार की प्रशासनिक पहल नहीं होने पर आत्मदाह करना यह एक तरह से शताब्दी वर्ष पर प्रश्न खड़ा कर रहा हैं। गांधी किसी कर्मकांड के मोहताज नहीं है। गांधी एक जीवन शैली है और जहां भी शोषण और उत्पीड़न अन्याय होता है वहां गांधी आज भी उसी रूप में प्रासंगिक हैं जिस रूप में कभी 100 साल पहले चंपारण में थे। आज भी चाहे लाख विकास के दावे कर लिये जाएँ लेकिन चंपारण सहित देश के अंतिम जन के परिस्थितियों में कोई खास गुणात्मक बदलाव नहीं है। बिहार में शराबबंदी एक अच्छी पहल है लेकिन शोषण और उत्पीड़न तथा प्रशासनिक उदासीनता के कारण अगर मजदूर आत्मदाह करते हैं तो निश्चित तौर पर चंपारण शताब्दी सत्याग्रह सामारोह एक कर्मकांड बन के रह जाएगा। इसलिए हम इस घटना की निंदा ही नहीं करते हैं बल्कि न्यायिक जांच की मांग करते हैं तथा संबंधित गैर जिम्मेवार प्रशासनिक अधिकारियों पर कार्यवाही की मांग करते हैं। यह बहुत ही दुखद है कि अहिंसक तरीके से बैठे हुए लोगों पर पुलिस फायरिंग हुई, लाठियां चलाई गईं। यह भारत के गुलामी की तस्वीर याद दिलाता है।